ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 59-62

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

दृश्यचित्रण में समकालीन कला के पर्याय : सतीश चंद्र

रुचिन वर्मा

चित्रकला विभाग, डी एस कालेज, अलीगढ़, डा. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ0प्र0) भारत

Received-05.10.2022, Revised-11.10.2022, Accepted-16.10.2022 E-mail: ruchin727@gmail.com

सारांशः ***भारत की समकालीन कला में उत्तर प्रदेश के कलाकारों को सम्मिलित किये बिना उसका तथ्यात्मक अध्ययन कर पाना अत्यंत कठिन है। यहां वर्ष 1911 में स्थापित हुए राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ ने उत्तर भारत में हो रहे कला के प्रति जागरण को एक नई दिशा प्रदान की, साथ ही यह स्कूल स्वातंत्र्योत्तर समकालीन कला का एक अति महत्वपूर्ण केन्द्र बनकर उभरा।***

20वीं शती की प्रादेशिक चित्रकला को यदि हम देखें तो ज्ञात होता है कि यहाँ ऐसे चित्रकारों की एक लंबी श्रंखला रही जिसने प्रदेश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहचान दिलाई। इसी के अंतर्गत यदि दृश्यचित्र कला को पटल पर रखकर चर्चा करें तो भी कुछ प्रमुख चित्रकारों के मध्य से सतीश चंद्र का नाम स्वतः मन में उभरता है जिन्होने स्वयं को दृश्यचित्रण के पर्याय के रूप में साबित किया साथ ही तैल सहित कुछ अन्य चित्रण माध्यमों में चित्रों को स्व व्यक्तित्व के अनुसार ही आकृतिमूलकता व अमूर्तन के आश्चर्यजनक सम्मिश्रण के रूप में उद्घाटित किया।

कुंजीभूत शब्द– समकालीन चित्रकला, दृश्यचित्रण, अमूर्तन, आकृतिमूलक चित्र, स्वातंत्र्योत्तर कला, प्रादेशिक चित्रकला।

1. प्रस्तावना– उत्तर प्रदेश का भू–भाग एवं वातावरण सदैव कलात्मक अभिव्यक्तियों से रचा भरा रहा है। समय के साथ प्रादेशिक कला का स्वरूप भी सदैव परिवर्तनशील रहा। प्रागैतिहासिक कला के साक्षात् प्रमाण प्रदेश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए, तब से लेकर आज तक कलाओं के विकास का अनवरत क्रम यहां देखनें को मिलता है। मुगल काल, जो कि भारतीय चित्रकला के लिए आदर्श समय था, के समय में भी कला के प्रमुख केन्द्र उत्तर प्रदेश के आगरा, फतेहपुर सीकरी व इलाहाबाद जैसे नगरों में ही स्थापित हुआ करते थे। आगे चलकर यही से विस्थापित कलाकारों व उनके वंशजों नें प्रदेश से अनयत्र जाकर यहां की कला विशेषताओं के मिश्रण से विभिन्न शैलियों को जन्म दिया।

वस्तुतः भारतीय समकालीन चित्रकला के विकास में भी उत्तर प्रदेश का विशेष योगदान रहा है। जिस समय भारत के विभिन्न हिस्सों में भारतीय चित्रकला का पुनरुत्थान आरम्भ हुआ, लगभग उसी समय प्रदेश के लखनऊ शहर में स्थापित हुए राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय नें समस्त उत्तर भारत में हो रहे कला के प्रति जागरण को एक नई दिशा प्रदान की व धीरे धीरे समकालीन कला का एक अति महत्वपूर्ण केन्द्र बनकर उभरा।

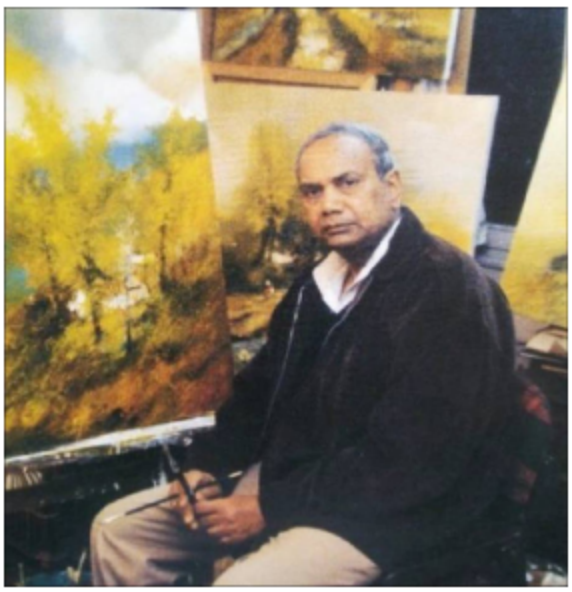

चित्र 2. सतीश चंद्र का आत्मचित्र

वास्तव में सन 1911 में उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में अंग्रेजों द्वारा राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय की स्थापना मील का पत्थर साबित हुयी। यद्यपि अंग्रेजों द्वारा इसकी स्थापना के पीछे निहितार्थ कुछ और ही थे फिर भी आगे चलकर इस कला महाविद्यालय से निकले कलाकारों नें प्रादेशिक समकालीन कला को एक नई दिशा प्रदान की। वर्ष 1925 में कला गुरु अवनींन्द्रनाथ टैगोर के शिष्य व "शिवसिद्ध" कलाकार असित कुमार हल्दार राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ के प्रथम भारतीय प्राचार्य नियुक्त हुए व आगे इन्हीं के प्रयासों से कला आचार्य ललित मोंहन सेन, सुधीर रंजन खास्तगीर, मदन लाल नागर आदि कलाकारों नें यहां आकर कलाकर्म को निर्बाध गति प्रदान की तथा रंग–रेखाओं व रुपाकारों को जो नई सांकेतिक दिशा दी वह आज भी विभिन्न कला आयामों में दिखाई देती है। वस्तुतः यदि राष्ट्रीय समकालीन कला परिप्रेक्ष्य में समीक्षा करें तो उत्तर प्रदेश में लखनऊ कला केन्द्र के योगदान को नजर अंदाज करके निष्पक्ष विवेचना प्रस्तुत नहीं की जा सकती क्योंकि 20वीं शती की प्रादेशिक चित्रकला को यहाँ के चित्रकारों नें राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो पहचान दिलाई वह स्वयं में एक मिशाल है। यद्यपि उत्तर प्रदेश के राजकीय कला एवं शिल्प

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

महाविद्यालय में श्रेष्ठ कलाकारों की एक लम्बी श्रृंखला रही है जिसमें असित कुमार हल्दार, ललित मोहन सेन, सुधीर रंजन खास्तगीर, हरिहर लाल मेंढ, बीरेश्वर सेन, दिनकर कौशिक, रणवीर सिंह बिष्ट, फ्रैंक वैज्ली, बद्रीनाथ आर्य सहित अन्य अनेक नाम हैं जो राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचानें जाते हैं, फिर भी यदि स्वातंत्र्योत्तर तीन चार दशकों की प्रादेशिक दृश्य चित्रकला प्रतिक्रियाओं पर दृष्टिपात करें तो एक नाम जो मानस पटल पर उभरता है, वह सर्वविदित नाम है : सतीश चंद्र।

सतीश चंद्र नें विराट व प्रगतिशील व्यक्तित्व एवं प्रयोगधर्मी प्रवृत्तियों के साथ कलारुपी अथाह सागर की गहराइयों को मापा व राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय समकालीन दृश्य चित्रकला के सूत्रधार बनें।

सतीश चंद्र मानते थे, "Nature is always bright. I do not find darkness anywhere in the world. Darkness comes from within."

उपरोक्त पंक्तियों को हम सतीश चंद्र की मनः स्थितियों का दर्पण मान सकतें हैं जिसमें उनके दृश्यचित्रण एवं सकारात्मक व्यक्तित्व की सुंदर झलक दिखाई पड़ती है।

2. सतीश चंद्र का आरंभिक जीवन– सतीश चंद्र का जन्म 5 जून 1940 को गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में एक संभ्रान्त परिवार में हुआ था व इनके पिता रेलवे विभाग में कार्यरत थे। सतीश चंद्र का बचपन पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे बुलंदशहर जिले के छोटे से कस्बे खुर्जा स्थित पैतृक हवेली में बीता जहॉ ये अपनें चारों ओर फैले हरे–भरे वातावरण सहित विभिन्न प्राकृतिक अभिप्रायों से परिचित व उनकी ओर आकर्षित हुए जिनके प्रभाव जीवन पर्यन्त इनके दृश्य चित्रों में चमकदार रंगों के प्रयोग के रुप मे परिलक्षित होते रहे।

इन्होंने अपनी कला शिक्षा राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ से प्राप्त की जहॉ से इन्होने सन 1963 मे स्नातक, तत्पश्चात दृश्यचित्रण में परास्नातक पूर्ण किया।

3. कार्यशैली व तकनीक– सतीश चंद्र ने आगे चलकर लखनऊ को ही अपनी चित्रकर्म स्थली बनाया व राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय मे प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए। आरम्भ से ही सतीश चंद्र के दृश्य चित्रों में विशाल खुले आकाश व हरीतिमा लिए भू–अंचल, स्वर्ण सदृश दिखाई पड़ते सरसों के पीले फूलों से भरे खेत व खलिहान, विभिन्न पहाड़ी रमणीय स्थलों जैसे हिमाचल स्थित मनाली व कुल्लू की घाटियों जहॉ पेड़ों से छनकर आती सुनहरी धूप सहित वायवीय प्रभावों को अपनें चित्रों में अंकित किया। दृश्य चित्रों में विभिन्न रंग भरी सुमधुर तानों का जैसा प्रयोग सतीश चंद्र नें किया वैसा अन्य किसी दृश्यचित्रकार के चित्रों में देखनें को नही मिलता।

इसके अतिरिक्त प्रकृति चित्रण विधा में इनके द्वारा पोत (टेक्स्चर) का अत्यधिक प्रायोगिक रूप दिखाया गया है जो कि साधारणतया प्रकृति चित्रण में कम ही देखने को मिलता है क्योंकि पोत का प्रयोग करते हुए चित्रों में प्रकृति के ठोस पन को दिखाना कलाकारों के लिए सदैव दुर्लभ कार्य रहा है किंतु सतीश चंद्र ने यह भागीरथ प्रयास किया एवं अपने चित्रों में लयात्मकता एवं पोत का सुंदर प्रयोग करते हुए प्राकृतिक आयामों को गढ़नशीलता प्रदान की जिससे उनके दृश्य चित्रण को एक नई पहचान मिली।

इनके द्वारा प्रयोग किए गए पोत के गुण अधिक करीब से देखने पर विशेष नजर आते हैं जोकि 16वीं शती के महान वेनेशियन चित्रकार तिशेन के चित्रों की याद दिलाते हैं। रंग प्रयोग के क्षेत्र में भी इनका एक अलग स्थान है जिनमें चमकीले भूरे एवं पीले रंगों का कुशल प्रयोग इनके चित्रों में दिखता है। सतीश चंद्र के प्रकृति चित्रों में बादलों की विवेचना में इंग्लैंड के महान दृश्य चित्रकार टर्नर की मिठास नजर आती है।

चित्रकार सतीश चंद्र के कृतित्व पर स्वच्छंदतावाद एवं पुनरुत्थान की झलक भी दिखाई पड़ती है जो शायद बंगाल की रूढ़िवादी शैली, जो कि लखनऊ व आसपास अधिक प्रचलित थी से अलग हटकर प्रादेशिक कला परिदृश्य को एक नई दिशा दिलाने में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई।

इन्होनें अपने दृश्य चित्रों में एक अलग विधा से रंग लगाने का कार्य किया जिसमें वे विभिन्न रंगों के मोटे टेक्सचर लगाकर उसको तूलिका के पिछले हिस्से अथवा नाइफ की सहायता से विशेष प्रकार से खुरच कर प्रकृति के विभिन्न आकृतियों को गढ़नशीलता प्रदान किया करते थे जो कि दर्शक के मन में कौतूहल पैदा कर देता हैं।

सतीश चंद्र ने प्रकृति के पोतों का अत्यधिक बारीकी से अध्ययन किया व जिस समय दृश्यचित्रों में अमूर्तन सर्वग्राही एवं प्रचलित हो रहा था ऐसे समय में इन्होंने विशेष तकनीकों में मूर्त दृष्यचित्रों का सृजन कर दृश्यचित्रण के पर्याय के रुप में अपनी अलग पहचान स्थापित की।

इसीलिए उत्तर प्रदेश ही नहीं संपूर्ण भारत में दृश्य चित्रण के क्षेत्र में सतीश चंद्र का नाम महत्वपूर्ण माना जाता है एवं कला जगत उनके चित्रों से सदैव प्रेरणा ग्रहण करता रहेगा।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

चित्र 2. दृश्यचित्र

चित्र 3. दृश्यचित्र

4. चित्रसृजन में निहित जीवन दर्शन– सतीश चंद्र का व्यक्तित्व भी उनके दृश्यचित्रों की भांति ही अत्यंत गम्भीर था इन्होंनें बाल्यावस्था से ही प्रकृति को बिल्कुल ही अलग ढंग से देखा व महसूस किया था इसी कारण ये प्रकृति में सदैव ही महान अध्यात्मिक शक्ति को महसूस करते थे। आपका विश्वास था कि प्रकृति से हटकर मानव अध्यात्म की कल्पना भी नहीं कर सकता क्योंकि प्रकृति ही ईश्वर का प्रत्यक्षीकरण है और उसमें विद्यमान रंग व आकार ईश्वरीयता की ओर ले जाने में सहायक होते हैं।

रंग वह पदार्थ है जो मन मस्तिष्क के साथ–साथ आत्मा को भी पवित्र करने की शक्ति रखता है और यही पवित्रता आत्मा को परमात्मा से मिलाने में सहायक सिद्ध होती है। चित्रकार सतीश चंद्र के द्वारा प्रयुक्त रंग स्वयं उनके मन व दर्शक के मन को अलौकिकता प्रदान करते हैं साथ ही सत्यम शिवम सुंदरम की अनुभूति कराने में भी सहायक हैं।

सतीश चंद्र के आरंभिक चित्रों का अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि इन्होंने आरम्भ में मानवाकृतियों से परिपूर्ण संयोजन भी बनाए किन्तु प्रकृति के प्रति उनके लगाव के कारण धीरे धीरे आकृतिमूलकता अमूर्तन में मिलकर उसी में खो गई। सतीश चंद्र की रंग रोगन सामग्री अत्यंत परिष्कृत हुआ करती थी जिस कारण विशेष रंगों की तान लिए जादुई प्रभाव उनके चित्रों में दिखाई पड़ते हैं।

इनका विश्वास था कि प्रकृति में प्रकाश का माध्यम विशाल आकाश है व आकाशीय प्रकाश की गुणवत्ता का सीधा प्रभाव उनकी कलाकृतियों के वातावरण तथा मूड पर पड़ता है। इनके जलरंगीय चित्रों में पतले रंगों का पारदर्शी बहाव कलाकार की मनः स्थितियों को स्पष्ट करने में सक्षम है।

सतीश चंद्र कहा करते थे –

"My life in landscape painting became a pilgrimage, a sacred path towards the new revelation of my inner being. I understood that my identity as a painter had survived, an identity that no outside force could destroy."[5]

सतीश चंद्र के जीवन के अंतिम दशक के दृश्यचित्रों पर दृष्टिपात करें तो इनकी छवि एक रहस्यवादी दृश्यचित्रकार के रूप में उभर कर आती है जिनमें गर्म रंगो के सकारात्मक प्रभावों के साथ धूमिल रंगों का अनोखा रहस्यात्मक गठजोड़ देखनें को मिलता है। सतीश चंद्र अपने चित्रों में सदैव आकाशीय बादलों के माध्यम से एक ऐसा रहस्यवाद प्रस्तुत करना चाहते थे जो दर्शक के मन को प्राकृतिक रहस्य में ले जाने एवं उसमें अध्यात्म को खोजने की शक्ति प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो सके। यदि दार्शनिक दृश्यचित्रकार की संज्ञा सतीश चंद्र जी को दें तो यह अतिशयोक्ति न होगी, जो कि चित्रों में कितनें ही अनकहे रहस्यों को अपनें भीतर समेटे हुए

चित्र 4. दृश्यचित्र

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

हैं। सतीश चंद्र नें अपने जीवन में कई उतार चढ़ावों को देखा किन्तु प्रकृति व मानवीय संवेदनाएं जीवन भर उनके साथ जुड़ी रहीं। इनका चित्रण कार्य आज भी उदयीमान दृश्यचित्रकारों के लिए प्रेरणा की मशाल के रूप में स्थापित है।

सतीश चंद्र को 1964,67,77 में उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी का वार्षिक पुरस्कार, 1968 में उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी का राधाकमल मुखर्जी स्वर्ण पदक, विशेष उपलब्धियों के कारण वर्ष 1989 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ने देश के अग्रणी कलाकार के रूप में इन्हें राष्ट्रीय अकादमी पुरस्कार से नवाज़ा एवं वर्ष 1993 में उत्तर प्रदेष सरकार द्वारा 'यश भारती सम्मान' प्रदान किया गया। इन प्रमुख पुरस्कारों के अतिरिक्त सतीश चंद्र नें अनेंक एकल व समूह प्रदर्शनियॉ लखन।, इलाहाबाद, कानपुर, मुम्बई, दिल्ली सहित विदेशों में भी आयोजित हुईं। आपके दृश्यचित्र देश विदेश के विभिन्न विभागों, संग्रहालयों–शैक्षिक व कला संस्थाओं में सुरक्षित हैं। दृश्यचित्रों के अतिरिक्त आपनें कमीशन वर्क के रूप में 1967 में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग के लिए पोस्टर्स चित्रित किए व 1971 में स्टेट इलेक्टिंसिटी बोर्ड के लिए सिरामिक म्यूरल्स भी बनाए।

5. निष्कर्ष– सतीश चंद्र के दृश्यचित्र प्रकृति के करीब रहकर प्रकृति अनुगामी व उसके संरक्षण का संदेश देते हैं। इनके दृश्यचित्रों ने आगामी कलाकारों को प्राकृतिक दृश्यचित्रण हेतु प्रेरणा प्रदान करनें का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है जो वर्तमान के सामाजिक परिवेश में पर्यावरण के दृष्टिकोण से भी अत्यंत उपयोगी है क्योंकि प्रकृति से हट कर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक नही कर सकता। इस दृष्टि से देखें तो प्रकृति चित्रण का समाज के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य में भी अत्यधिक महत्व है इस हेतु प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति से जुड़ना होगा साथ ही प्रत्येक कलाकार को प्रकृति चित्रण विधा को एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में अपनाना होगा जोकि इस पृथ्वी को स्वस्थ व दीर्घायु रखनें के लिए भी नितांत आवश्यक है। पृथ्वी पर मनुष्य ही वह बाणी है जिसने इस धरती को सर्वाधिक दूषित किया है और अब वह समय आ गया है कि मनुष्य ही इस पृथ्वी को सुरक्षित रखने का दायित्व भी अपने हाथों में लें, क्योंकि उसके इस पवित्र कृत्य से पृथ्वी पर बसने वाली लाखों प्रजातियां विलुप्त होने से बचाई जा सकती हैं। ईश्वर द्वारा बदन जीवन को बचाना परम आवश्यक है, जो प्रकृति के संरक्षण से ही संभव है। इस दिशा में कलाकारों को भी प्रकृति की उपासना अपने चित्रण के माध्यम से करनी चाहिए जिससे दर्शक के मन में प्रकृति प्रेम की भावना जागृत हो सकें, जो मानव कल्याण के साथ–साथ समस्त प्राणियों के लिए भी अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chandra, M.(2001). Master of Atmospherics: Satish Chandra, Roli Books Pvt. Ltd., New Delhi, pg. 77.
2. मिश्र, अवधेश 2000, संपादक, कला दीर्घा, उत्कर्ष प्रकाशन, लखनऊ, पृ.सं. 75.
3. Bhatnagar, S. (2011). Variegated Vista, Shubhi Publications, Delhi, pg. 164-169.
4. मिश्र, अवधेश 2011, निषर्ग के चितेरे सतीश चंद्र, जनसंदेश टाइम्स, लखनउ।
5. Chandra, M.(2001). Master of Atmospherics: Satish Chandra, Roli Books Pvt. Ltd., New Delhi, pg. 87.

*****